7

सामाजिक संरचनाएं और सामाजिक पद्धतियाँ

एक उच्च विद्यालय में छात्र हर वर्ष बदलते रहते हैं। कुछ विद्यार्थी उत्तीर्ण होकर नई कक्षा में प्रवेश करते हैं। नए कुछ छात्र दूसरे विद्यालयों से स्थानांतरित होकर आ जाते हैं। कुछ विद्यार्थी आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण विद्यालय छोड़ देते हैं लेकिन विद्यालय का अस्तित्व एक सामाजिक संस्था के रूप में कायम रहता है। सामान्यत:, हम कुछ ऐसे आचरणों के आदी होते हैं (जैसे ब्रुश करना, नाश्ता करना, स्कूल जाना आदि) जिन पर सामान्यत: हमारा ध्यान नहीं जाता है। लेकिन यही क्रिया-कलाप मानव समाज की संरचना की महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं। यदि हम अपने दैनिक क्रिया कलापों का अवलोकन करें तो हम पाऐंगे कि सामाजिक संरचना का असर किस हद तक हमारे आचरण पर पड़ता है। हमारे विद्यालय या नियोक्ता यह निर्धारित करते हैं कि हमें कब सोना है और कब जगना है। या हमें कब खाना है और कब काम या पढ़ाई के बाद आराम करना है। प्राय: हमारे अभिभावक और कार्य बाजार की मांग लक्ष्य गढ़ने एवम् सफलता के सोपान चढ़ने में हमारी मदद करते हैं।

उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप

- सामाजिक संरचना या व्यवस्था की परिभाषा बता सकेंगे;
- इसकी मुख्य विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे;
- सामाजिक संरचना के आधारों /आवश्यकता, भूमिका और प्रस्थिति का वर्णन कर सकेंगे;
- सामाजिक व्यवस्था का अर्थ समझा सकेंगे;
- सामाजिक संरचना के अर्थ का वर्णन कर सकेंगे।

Notes

7.1 सामाजिक संरचना और सामाजिक संगठन

सामाजिक संरचना की परिभाषा

सामाजिक संरचना दैनिक जीवन के कार्यों का निष्पादन कुशलता पूर्वक करने में मदद करती है। यह सैकड़ों मनुष्यों को उन सूक्ष्म कार्यों को करने योग्य बनाती है जो कि दूसरी दृष्टि से हर छोटे कार्य को करने के पहले करने पड़ते हैं। और यह समूह और समाज को एक स्तर पर स्थिरता तथा सततता प्रदान करती है। सामाजिक संरचना मुख्यत: सामाजिक यथार्थ है जिसका असर हमारे दैनिक जीवन पर पड़ता है। दूसरे शब्दों में सामाजिक संरचना समाज के संभावित संबंधों को व्यवस्थित करने का तरीका है। सामाजिक व्यवस्था सामाजिक संरचना से गहरी जुड़ी है। बिना किसी संरचना के कोई इकाई कार्य नहीं कर सकती है। हालांकि हमें याद है कि समाजशास्त्र में सामाजिक संरचना की कोई भी सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। सामाजिक संरचना की कोई भी विशेष परिभाषा समाजशास्त्रियों के द्वारा वास्तविकताओं को देखने की उनकी दृष्टि पर निर्भर करती है। बहुत से विचारकों ने इस धारणा पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार विमर्श किया है। कुछ समाजशास्त्रियों ने सामाजिक संरचना को सामाजिक मूल्यों के आधार पर व्याख्यायित एवम् वर्गीकृत किया है तो कुछ समाजशास्त्रियों ने किसी संरचना में लक्ष्यों की पूर्ति को महत्वपूर्ण बताया है जैसे परिवार, विद्यालय या सेना हरेक को सामाजिक संरचना की आत्मा कहा है। समाजशास्त्रियों ने, प्राय:, संघ, संस्थान और समुदायों के अध्ययन को भी सामाजिक संरचना के विश्लेषण की परिधि में रखा है। साधारणत: 'संरचना' शब्द का अर्थ है कि किसी वस्तु का वह भाग जो कि एक दूसरे से क्रमिक रूप से जुड़ा है। अत: 'संरचना' का अर्थ है विभिन्न भागों को व्यवस्थित ढंग से लगाना। दूसरे शब्दों में यह विभिन्न भागों का स्थिर आंतरिक संबंध है। साधारणत: संरचना एक ऐसी व्यवस्था है जो मानव व्यवहार को नियंत्रित और निर्देशित करती है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से संरचना, संगठन को व्यवस्थित किए जाने का ढंग बताती है जो कि मानव व्यवहार को निर्दशित करता है। यह विशेष प्रकार के मानव आचरण पर नियंत्रण भी लगाती है।

सामाजिक संरचना यह बताती है कि समूह या समाज की विभिन्न इकाईयाँ कैसे एक दूसरे से जुड़ी हैं। कुछ समाजशास्त्रियों के अनुसार सामाजिक संरचना शब्द का उपयोग अंतर संबंधित संस्थानों, ऐजेंसियों और सामाजिक रचना के साथ साथ प्रस्थितियों और हर व्यक्ति की सामाजिक भूमिका के संदर्भ में किया जाता है। यह कहा जा सकता है कि सामाजिक संरचना कुल मिलाकर हमारे सामने समाज की बनावट का रेखा-चित्र प्रस्तुत करती है। समूह, संस्थान, संगठन और संघ इसकी इकाइयाँ हैं। जैसा कि हम

जानते हैं। कि हर स्त्री पुरुष अपने को एक दूसरे से संबंधित रखते हैं और उसे संरचनात्मक रूप देते हैं। वह या तो समूह हो सकता है या संघ या कोई संगठन। सामाजिक संरचना इन्हीं संरचनात्मक इकाइयों से बनती है जिसके आधार पर समाज चलता है। वास्तव में यह संरचना विश्व में बहुत पहले से विद्यमान है। हमारे जन्म के पहले कई पीढ़ियों पर उसका प्रभाव पड़ा है। यह हमारे आचरण और स्वभाव को निरंतर गढ़ती रहती है। यह प्रक्रिया बाद में हमारी प्रस्थिति या प्रतिष्ठा से गहरी जुड़ी हुई है।

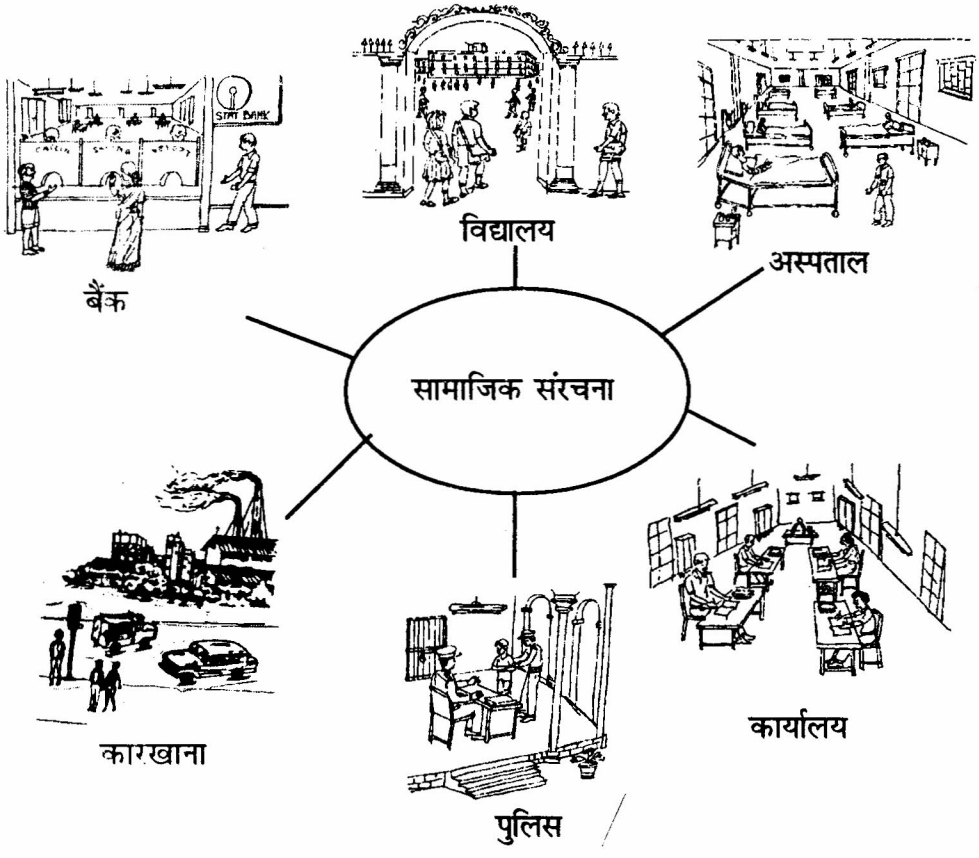

सामाजिक संरचना का अर्थ हम आसानी से समझ सकते हैं। यदि हम अपने शरीर की आंगिक संरचना (बनावट) का उदाहरण ले ले तो शरीर विभिन्न अंगों का प्रबंधन है; जैसे हाथ, पैर, मुँह, नाक, कान आदि। शरीर इन्हीं में से एक दूसरे पर आश्रित अंतर संबंधित अंगों के माध्यम से काम करता है। सामाजिक संरचना भी कई भागों का प्रबंधन है; जैसे परिवार, विद्यालय, कारखाना, कार्यालय, गैर सरकारी संगठन, कारागार, पुलिस, अस्पताल आदि।

Notes

पाठगत प्रश्न 7.1

सही उत्तर के आगे (✓) का निशान लगाएं:

1. सामाजिक संरचना संबंधित है:

   अ. प्रस्थितियों एवम् भूमिकाओं से

   ब. नैतिक मूल्यों से

   स. समाज अथवा समुदाय की विभिन्न इकाइयों के एक दूसरे से जुड़े रहने के तरीके से

2. निम्नलिखित में कौन कौन सामाजिक संरचना की इकाइयाँ हैं:?

   अ. एक प्रस्थिति

   ब. एक संगठन

   स. उपर्युक्त दोनों

3. एक संगठन का अर्थ है:

   अ. सामाजिक संबंधों का समन्वय

   ब. विभिन्न भागों का समन्वय

   स. निश्चित स्थितियाँ।

सामाजिक संरचना की विशेषताएँ

सामाजिक संरचना का निर्माण मानव के आंतरिक संबंधों और संगठन से होता है जो किसी निश्चित लक्ष्य एवम् उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संगठित होते हैं। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए सामाजिक संरचना में कुछ निश्चित सिद्धान्तों का रहना आवश्यक है। जो इस प्रकार हैं,

1. आदर्शवादी व्यवस्था

आदर्शवादी व्यवस्था समाज में सिद्धान्तों और मूल्यों की स्थापना करती है। संस्था और संघ इसके अनुसार एक दूसरे से अंतर संबंधित हैं। लोग अपनी भूमिका स्वीकृत सामाजिक मानकों के आधार के अनुसार निभाते है। उदाहरण के लिए वृद्धों के आवास का प्रचलन एक तरह से अभी भी हमारे समाज में वैसा नहीं है जिस प्रकार यह अमरीका में प्रचलित है। यह अंतर आदर्शवादी संरचना के कारण है जो भिन्न

Notes

जीवनमूल्यों को मान्यता देता है। भारतीय मान्यताओं के अनुसार वृद्धों को वृद्धाश्रम में भेजना अमेरिका की तरह स्वागत योग्य नहीं माना जाता है परिणामस्वरूप हम दोनों समाजों की सामाजिक सरंचनाओं में अंतर देखते हैं।

2. स्थिति व्यवस्था

स्थिति व्यवस्था का अर्थ व्यक्ति की प्रस्थितियों और भूमिकाओं से है। व्यक्ति की इच्छाएँ और अभिलाषाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। किसी भी सामाजिक संरचना का सुचारु रूप से चलना उसकी प्रस्थिति या भूमिका के उचित कार्य-निर्धारण पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए जब हम 'पद' (प्रस्थिति) शब्द सुनते हैं तब हम इसका आकलन प्रतिष्ठा से करते हैं। समाजशास्त्र में पद (प्रस्थिति) का अर्थ व्यक्ति की उस स्थिति से लगाया जाता है जिस पर वह है। यहाँ स्थिति का अर्थ बहुत हद तक प्रतिष्ठा से हो सकता है जैसे कि न्यायाधीश, डाक्टर या कम प्रतिष्ठा वाला बस का कन्डक्टर। इस समाज में हम सभी को अलग अलग स्थान पर रखते हैं। आप एक साथ एक पुत्र या पुत्री हो सकते हैं और विद्यार्थी भी। निश्चित रूप से आपकी पदवी (प्रस्थिति) बदलती रहती है जैसी कि आपकी स्थिति जीवन और समाज में बदलती है।

3. अनुज्ञप्ति व्यवस्था

मानकों को सही तरीके से लागू करने के लिए हर समाज में एक अनुज्ञप्ति व्यवस्था होती है। इसे समाज द्वारा निर्धारित विभिन्न परिपेक्ष्यों जैसे सम्मान और सजा या दंड के द्वारा भी समझा जा सकता है। सामाजिक संरचना के विभिन्न भागों के बीच समन्वय, सामाजिक प्रतिमानों की पुष्टि पर निर्भर करता है। जो इसे नहीं मानते उन्हें सजा दी जाती है। लेकिन, अपुष्टिकरण भी समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है जिसके बिना समाज में परिवर्तन नहीं होता है। यह सामाजिक प्रक्रिया का प्रभावशाली विरोधाभास है। सामाजिक संरचना की स्थिरता अनुज्ञप्ति व्यवस्था के प्रभावोत्पादक ढंग से लागू होने पर निर्भर करती है जो हमें देश के सामाजिक एवम् राजनीतिक वातावरण के विषय में बताता है। उदाहरण के लिए भारत में अभी बलात्कार के लिए मृत्यु की सजा पर गहन चर्चा चल रही है। यह मुख्यत: गुजरात दंगों के बाद की स्थिति है जब बलात्कार की कई घटनाएँ दर्ज की गईं, इसके साथ साथ भारत में तेजी से बढ़ रही बलात्कार की घटनाओं के कारण भी यह मुद्दा अधिक गर्म है। अनुज्ञप्ति या तो सकारात्क होती है या नकारात्मक। समाजशास्त्र में 'अ' (ए) को स्वीकार करना सकारात्मक अनुज्ञप्ति है, (फ) या (एफ) को स्वीकार करना नकारात्मक है। नौकरी में तरक्की सकारात्मक है। कड़ी निंदा नकारात्मक है।

4. पूर्वानुमानित प्रतिक्रिया व्यवस्था

हर दिन हम इस तरह के शब्द सुनते हैं ''कार्य नीति'' अथवा हम किसी सूचनापट

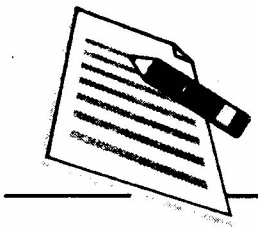

Notes

पर देखते हैं जिस पर लिखा होता है ''शहर आपका है, साफ रखें''। ये सभी क्रियाएँ पूर्वानुमानित प्रतिक्रिया व्यवस्था के कार्य है।

पूर्वानुमानित प्रतिक्रिया व्यवस्था व्यक्ति से आशा रखती है कि वह सामाजिक व्यवस्था में भाग ले। यह इस बिन्दु की ओर संकेत करता है कि हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए और उसे पूरी करने का प्रयत्न करना चाहिए। उपर्युक्त व्यवस्था पर निर्भर रहकर एक सामाजिक संरचना सफलता पूर्वक कार्य कर सकती है।

7.2.1 सामाजिक संगठन का अर्थ

सामाजिक संरचना की धारणा सामाजिक संगठन की धारणा को समाविष्ट करती है। सामाजिक संरचना का संबंध सामाजिक संगठन के मुख्य अधिकारों से है। जो हैं विभिन्न प्रकार के समूह, संघ एवम् संस्थान। अब संगठन शब्द का अर्थ देखें। संगठन का अर्थ व्यक्तियों या किसी भाग के प्रबंध से है। इस प्रकार गिरजाघर, महाविद्यालय, खेल समूह और राजनीतिक दल, संगठन के उदाहरण हैं। इन सभी में व्यक्तियों या भागों का प्रबंधन है जो कि अंतर-संबंधित है अथवा एक दूसरे पर निर्भर करता है। हम शिक्षण संस्थान या महाविद्यालय का उदाहरण ले सकते हैं। एक महाविद्यालय के अन्दर प्रधानाचार्य, प्रोफेसर, क्लर्क, विद्यार्थी आदि होते हैं। यह और कुछ नहीं बल्कि विभिन्न भागों या व्यक्तियों का प्रबंधन है। हर किसी को अपनी भूमिका निभानी होती है साथ-साथ तभी सामाजिक सबंधों में समन्वय कायम रहता है।

संगठन कई प्रकार के होते हैं। राज्य को राजनीतिक संगठन कहा जाता है क्योंकि यह राजनीतिक विषयों से संबंध रखता है। कारखाना एक आर्थिक संगठन है क्योंकि यह वस्तु के उत्पादन एवम् वितरण से संबंध रखता है। गिरजा घर एक धार्मिक संगठन है और यह आध्यात्मिक विषयों का ध्यान रखता है। ये सभी समाज के अलग-अलग संगठन हैं। संगठन एवम् सामाजिक संरचना एक दूसरे से गहरे जुड़े हैं। लेकिन ये दोनों अवधारणाएँ अलग-अलग बिन्दुओं पर बल देती हैं। संगठन सामाजिक संबंधों के समन्वय पर बल देता है जबकि सामाजिक संरचना स्थिति और कुछ नियमों एवम् सामाजिक संबंधों को अपने में समाहित रखती है।

पाठगत प्रश्न 7.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए सही शब्दों से करें:

1. भूमिका का अर्थ है ..... आचरण (कार्यनिर्धारित, प्रत्याशित, निश्चित)

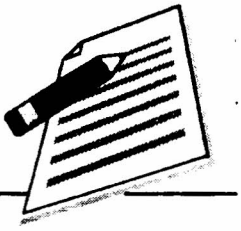

Notes

2. समाज में एक व्यक्ति की स्थिति को कहते हैं ..... (श्रेणी, पद, प्रस्थिति)

3. सामाजिक संरचना के सदस्य एक सामान्य ..... के लिए अन्तर संबंधित रहते हैं। (लक्ष्य, नियम, कानून)

4. सामाजिक संरचना की स्थिरता निर्भर करती है उसके ..... के प्रभाव पर (अनुज्ञप्ति, सकारात्मकता, नकारात्मकता)

5. एक वरिष्ठ महिला, एक अनाथ शिशु, एक डाक्टर, एक वकील होना कहलायेगा ..... सम्पन्नता। (प्रस्थिति, आवश्यकता, मूल्य)

7. सामाजिक संरचना के आधर (बुनियाद)

हमने पहले यह चर्चा की है कि संरचना का अपने उद्योगों के अंतर संबंधों से लेना-देना है और उसी के परिणामस्वरूप समाज सद्भावपूर्ण तरीके से चलता है। संस्थान, संघ, समूह, संगठन समुदाय सभी सामाजिक संरचना के भाग हैं।

सामाजिक संरचना के कार्यों को समझने के लिए इसकी बुनियादों (आधारों) का विश्लेषण करें

1. लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रयासरत रहने की आवश्यकता

मनुष्य सामाजिक संरचना का मुख्य संघटक है। मनुष्यों का स्वभाव एवम् रुचियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं सामाजिक संरचना का विकास उसके विभिन्न संगठनों के बीच के अंतर संबंधों के आधार पर होता है। समान लक्ष्य की पूर्ति इन्हीं अंतर-संबंधों की बुनियादों में निहित होती है। उदाहरण के लिए परिवार या संबंध व्यवस्था सामाजिक संरचना का भाग है। यहाँ पर सभी सदस्य एक दूसरे के परिवार की खुशियों के लिए अंतर-संबंधित हैं।

2. किसी की भूमिका और प्रस्थिति को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना

प्रत्येक सामाजिक संरचना अपने सदस्यों को एक निश्चित प्रस्थिति और भूमिका प्रदान करती है। प्रस्थिति साधारणत: एक समूह और समाज का सामाजिक रूप से परिभाषित स्थान है। भूमिका किसी व्यक्ति का अपनाया हुआ वह आचरण है जो कि समूह या समाज में उसकी प्रस्थिति से निर्धारित होता है। प्रस्थिति के साथ कई संबंधित भूमिकाएँ जुड़ी होती हैं। अंग्रेजी के शिक्षक से केवल अंग्रेजी पढ़ाने की ही उम्मीद नहीं की जाती अपितु उनसे उम्मीद की जाती है कि चिंतित अभिभावकों से मिलें, नाटकों में रुचि रखने वाले छात्रों को राय दें, साथ-साथ पुस्तकालयों के लिए पुस्तक की आपूर्ति का आदेश दें। प्रस्थितिओं और भूमिकाओं का निर्धारिण प्रथा, परम्परा और समाज में हुए

Notes

समझौते से होता है। यही प्रस्थितियाँ विभिन्न संस्थानों, ऐजेंसियों, तथा पद्धतियों को जन्म देती हैं। जब ये किसी खास तरीके से अंतर संबंधित एवम् व्यवस्थित किए जाते हैं तो ये सभी सामाजिक संरचना का निर्माण करते हैं सामाजिक संरचना में हर मनुष्य को एक निश्चित ''प्रस्थिति'' एवम् जिम्मेदारी दी जाती है। व्यक्ति की मृत्यु से उसकी प्रस्थिति एवम् जिम्मेदारी में कोई बदलाव नहीं आता है। जो नया व्यक्ति मृत व्यक्ति का कार्यभार संभालता है उसे भी प्रस्थिति के अनुसार समाज में भूमिका निभानी पड़ती है। यदि प्रस्थिति नई है (अकेली तलाकशुदा नारी के संदर्भ में) तो उसके लिए भूमिका का निर्धारण करना पड़ सकता है। नई प्रस्थिति जो कि भूमिका से जुड़ी होती है उन व्यक्तियों के आचरण से धीरे-धीरे परिभाषित होती है जिनका अधिकार इस नई प्रस्थिति पर है।

3. प्रतिमान तथा लोकाचार

प्रतिमान सामान्य रूप से मान्य आचरण है। प्रतिमान व्यक्ति की भूमिका को परिभाषित करता है। अत: सामाजिक संरचना के सदस्यों की स्थिति एवम् भूमिका निर्धारण में प्रतिमान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो इसे जीवंत और स्थिर बनाता है। एक परिवार के कुछ निर्धारित प्रतिमान हो सकते हैं। ये सभी सामाजिक संरचना के अंतर संबंध बरकरार रखने में मदद करते हैं। मिसाल के तौर पर परिवार में पिता को अपनी भूमिका निभानी है, समान रूप से माँ और बच्चों की भी कुछ निश्चित भूमिकाएं निभानी हैं, लेकिन भारतीय पारिवारिक संरचना में, प्राय:, माँ का स्थान महत्वपूर्ण है जो कि परिवार के सभी सदस्यों की देखभाल करती है, जबकि अमरीकी परिवारों में बच्चों सहित सदस्यों में स्व-सहाय्य का आचरण है। इसके अतिरिक्त, आशानुरूप भूमिका जो कि समाज की परिभाषा से भूमिका का आचरण कैसे किया जाना चाहिए, हमेशा भूमिका प्रदर्शन से मेल नहीं खाती, यानि कि जिसका तात्पर्य व्यक्ति के भूमिका निभाने के तरीके से है। सामाजिक अन्तरक्रिया की प्रक्रिया में जब कोई व्यक्ति दो या दो से अधिक भूमिकाएँ निभाता है तो विपरीत माँगों के कारण भूमिका विवाद उत्पन्न होता है, उदाहरण के लिए पुरुष प्रधान समाज में, जब कोई स्त्री काम करने के लिए निकलती है तब उसे माँ की भूमिका और कार्य करने वाली नारी की भूमिका की अपेक्षाओं के बीच भूमिका-विवाद सहना पड़ता है।

पाठगत प्रश्न 7.3

सही उत्तर चुनें:

1. सामाजिक संरचना का मुख्य संघटक है:

   क. समूह ख. संस्थान ग. मनुष्य

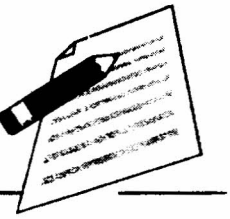

2. एक प्रस्थिति होती है:

   क. समूह या समाज में सामाजिक रूप से परिभाषित स्थान

   ख. सामाजिक रूप से परिभाषित कोई प्रत्याशित आचरण;

   ग. उपर्युक्त दोनों

3. भूमिका होती है:

   क. एक समूह या समाज में प्रस्थिति के द्वारा निर्धारित किसी व्यक्ति का प्रत्याशित आचरण,

   ख. एक समूह या समाज में सामाजिक रूप से परिभाषित स्थान

   ग. उपर्युक्त में से कोई नहीं।

सामाजिक व्यवस्था

सामाजिक व्यवस्था का अर्थ समझने के पूर्व यह आवश्यक है कि हम व्यवस्था शब्द से अवगत हों। विभिन्न संगठक इकाइयों का सुव्यवस्थित प्रबंध ही व्यवस्था है। व्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ हैं:

1. व्यवस्था विभिन्न भागों से बनती है।
2. विभिन्न भागों के बीच क्रमवार संबंध होना चाहिए।
3. इन भागों को व्यवस्थित करने से एक पद्धति उभरनी चाहिए।
4. एक व्यवस्था के विभिन्न भागों के बीच व्यवहारिक संबंध होता है।
5. सभी भाग नया अस्तित्व बनाते हैं वे व्यवहारिक रूप से परस्पर संबंधित होते हैं।

व्यवस्था शब्द की विवेचना करने के बाद अब हम सामाजिक व्यवस्था की अवधारणा का विश्लेषण कर सकते हैं। सामाजिक व्यवस्था परस्पर सामाजिक अन्तरक्रियाओं का एक सुव्यवस्थित एवम् क्रमवार प्रबंधन है। सामाजिक व्यवस्था व्यक्ति की अनेकता से बना है। वे सामाजिक पद्धति में निहित प्रतिमानों तथा आशायें के अनुसार दूसरों से अनतर्क्रिया करते हैं। सामाजिक व्यवस्था की कई सहायक व्यवस्थाएँ होती हैं। जैसे– राजनीतिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था। ये सामाजिक व्यवस्था के प्रचलित अर्थों एवम् बंटे हुए प्रतिमानों के आधार पर एक दूसरे को प्रभावित करती हैं।

सामाजिक व्यवस्था की विशेषताएँ

1. सामाजिक व्यवस्था व्यक्तियों की अनेकता की अंतर्क्रियाओं पर आश्रित रहती है।

Notes

2. इस परस्पर अंतर्क्रिया का अर्थ होना चाहिए।

3. सामाजिक व्यवस्था एकता है जहाँ भिन्न भाग जैसे संस्थान, रिवाज, परम्परा, प्रक्रिया और कानून एकीकृत तरीके से व्यवस्थित किए जाते हैं।

4. सामाजिक व्यवस्था के भागों के बीच व्यवहारिक संबंध होता है हम साईकल का उदाहरण ले सकते हैं जिसमें दो दस्ते, दो चक्के, मुक्त चक्का और चेन आदि होते हैं लेकिन साईकल को चलाने के लिए चक्के और चेन आदि को जुड़ा रहना चाहिए। इसका अर्थ है कि सभी भाग एक दूसरे पर आश्रित और परस्पर संबंधित हैं।

5. सामाजिक व्यवस्था सांस्कृतिक व्यवस्था से जुड़ी है। संस्कृति अंतर्क्रिया के अंतर संबंधों की प्रकृति को निर्धारित करती है।

सामाजिक व्यवस्था का वातावरणीय पक्ष भी है। यह किसी निश्चित युग से जुड़ा रहता है तथा एक निश्चित क्षेत्र एवम् समाज से संबंधित रहता है वातावरण का असर जीवन की सभी क्रियाओं पर पड़ता है।

पाठगत प्रश्न 7.4

निम्न में से कौन सही या गलत है:

1. सामाजिक व्यवस्था अन्तक्रियाओं पर आधारित नहीं होती है।
2. सामाजिक व्यवस्था सांस्कृतिक व्यवस्था से संबंधित नहीं होती है।
3. सामाजिक व्यवस्था के भागों के बीच व्यवहारिक संबंध रहता है।

7.5 सामाजिक व्यवस्था के आधार

सामाजिक व्यवस्था का अर्थ समझने के लिए सामाजिक व्यवस्था के आधारों को समझने की आवश्यकता है।

1. आस्था एवम् ज्ञान

ब्रह्माण्ड के किसी भी विषय के पक्ष में यदि कोई कथन सत्य मान लिया गया है तो उसे आस्था कहते हैं। आस्था सामाजिक क्रिया की बुनियाद है।

2. भावुकता

भावुकता आस्था से घनिष्ठ रूप से जुड़ी रहती है। भावुकतासे पता चलता है कि हम

Notes

विश्व के बारे में क्या महसूस करते हैं। भावुकता अनुभव एवम् सांस्कृतिक प्रशिक्षण की उपज है। भावुकता कई प्रकार की हो सकती हैं जैसे बौद्धिक, सैद्धान्तिक, धार्मिक आदि। भावनाओं की ऐतिहासिक एवम् सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होती है। जैसा कि हम जानते हैं कि अंग्रेजों की फूट डालो और शासन करो की नीति थी जिसने हिन्दू और मुसलमानों के बीच घातक धार्मिक भावनाओं का निर्माण कंपनी के शासन के समय कर दिया था। हिन्दू मुसलमानों में परस्पर एक हजार वर्ष तक कोई घातक एवम् विस्फोटक स्थिति पैदा नहीं हुई थी जैसा ब्रिटिश काल में हुआ।

3. लक्ष्य एवम् उद्देश्य

उद्देश्य सामाजिक संरचना का निर्माण करते हैं। सामाजिक व्यवस्था से संबंधित सामाजिक संरचना के सदस्यों से एक निश्चित कार्य को परस्पर क्रियाओं द्वारा पूर्ण करने की आशा की जाती है। सामाजिक व्यवस्था की प्रकृति मनुष्य की जरूरत, लक्ष्य एवम् परिणाम से निर्धारित होती है। प्रथमतः मनुष्य जीवन की आधारभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए एक जुट हुआ है। जैसे, भोजन, वस्त्र एवम् आवास।

4. प्रतिमान

प्रतिमान वे सिद्धान्त हैं जिससे सही और गलत का निर्धारण होता है। सामाजिक संबंधों में निहित ही है कि क्या योग्य है और क्या अयोग्य, तथा क्या उचित है और क्या अनुचित। हर सामाजिक व्यवस्था में प्रतिमान होते हैं जिन्हें हर व्यक्ति ध्यानपूर्वक पालन करने के लिए बाध्य होता है।

5. प्रस्थिति एवम् भूमिका

सामाजिक व्यवस्था में हर व्यक्ति की एक प्रस्थिति होती है। यह प्रस्थिति अरोपित की जाती है या प्राप्त की जाती है। आरोपित प्रस्थिति वह है जो व्यक्ति पर समूह या समाज द्वारा थोपी जाती हैं। यह लिंग, जाति, या उम्र पर आधारित होती है। प्राप्त प्रस्थिति वह है जो व्यक्ति अपने परिश्रम से प्राप्त करता है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति जो छोटी जाति का है पर आर्थिक सफलता से ऊँची प्रतिष्ठा पा लेता है। हम आरोपित उपलब्धि परक प्रस्थिति (प्रस्थिति) के बारे में बात कर सकते हैं। उदाहरण के लिए अनुसूचित जाति के आई. ए. एस. अफसर में प्राप्त एवम् आरोपित दोनों प्रस्थिति (प्रतिष्ठा) समाहित हैं। सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति से आशा की जाती है कि वह अपनी भूमिका, प्रस्थिति (प्रतिष्ठा) के अनुसार निभाए। व्यक्ति बदल सकता है लेकिन प्रस्थिति (प्रतिष्ठा) और भूमिका नहीं बदल सकती हैं।

6. श्रेणी/स्थिति

श्रेणी का अर्थ यहाँ हैसियत से है। इसमें वह महत्व शामिल है जो व्यक्ति उस व्यवस्था

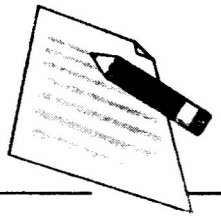

Notes

के प्रति रखता है तथा जिसमें श्रेणी बनायी गयी है। एक व्यक्ति को दो तथ्यों के आधार पर श्रेणी प्राप्त होती है। एक वह जो उसका मूल्यांकन करके प्रदान की जाती है और दूसरी वह जो व्यवस्था के प्रतिमानों के अनुरूप उसकी क्रिया से प्राप्त होती है। उदाहरण के लिए एक कंपनी के व्यापार-अधिकारी की श्रेणी आधुनिक समय के समाज में शिक्षक से अधिक है, जबकि प्राचीन काल में शिक्षक, प्राय:, राजा से अधिक ऊँची श्रेणी वाला होता था।

7. **शक्ति**

हममें से अधिकतर यह महसूस करते हैं कि हम मत देते हैं और राजनीतिज्ञों को शक्ति देते हैं। लेकिन बहुत से निर्णयों में हम उनके लिए महत्व नहीं रखते हैं। शक्ति का संबंध किसी को नियंत्रित या वंचित करने से है। राज्य एवम् पुलिस व्यवस्था शक्ति प्रदर्शन के स्वरूप हैं।

8. **अनुज्ञप्ति**

इसका तात्पर्य पुरस्कार एवम् दंड से है जो सामाजिक व्यवस्था के सदस्यों के प्रतिमानों एवम् लक्ष्यों को परिपुष्ट करने के लिए एक औजार की तरह इस्तेमाल होता है। अनुज्ञप्ति सकारात्मक या नकारात्मक दोनों होती है। नकारात्मक अनुज्ञप्ति, उदाहरणत:, मौत की सजा है, सकारात्मक अनुज्ञप्ति दोषी को पुनर्वास कराने का प्रयास है।

9. **सुविधा**

सुविधा वह साधन है जिससे व्यवस्था के अन्दर लक्ष्य की पूर्ति हो। यह आवश्यक है कि व्यक्ति को सामाजिक व्यवस्था में उचित सुविधाएँ दी जानी चाहिए ताकि वह अपनी भूमिका कुशलतापूर्वक निभा सके। सुविधाएं सिर्फ रहनी नहीं चाहिए उन्हें वास्तविक रूप में होना या महसूस किया जाना चाहिए। सामाजिक व्यवस्था के लक्ष्य एवम् उद्देश्य सिर्फ सुविधाओं के उपयोग द्वारा ही महसूस किए जा सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 7.5

बताएँ निम्न कथन सही हैं या गलत:

1. प्रतिमान सही और गलत व्यवहार सुनिश्चित करने के निर्णायक मापदण्ड हैं।
2. श्रेणी एवं हैसियत एक ही बात नहीं है।
3. शक्ति किसी को नियंत्रित एवम् वंचित करने की क्षमता है।
4. अनुज्ञप्ति सिर्फ नकारात्मक हो सकती है।
5. प्रस्थिति प्राप्त एवम् आरोपित होती है।

आपने क्या सीखा

- सामाजिक संरचना समाज के संभावित संबंधों को संगठित करने का रास्ता है।
- सामाजिक संरचना सामाजिक संगठन के मुख्य रूपों यानि, विभिन्न प्रकार के समूहों, संघों और संस्थानों से संबंधित है।
- सामाजिक संरचना की मुख्य विशेषताएं आदर्शवादी व्यवस्था, स्थिति व्यवस्था, अनुज्ञप्ति व्यवस्था, पूर्वानुमानित प्रतिक्रिया व्यवस्था होती हैं।
- सामाजिक संरचना की बुनियाद है– लक्ष्य को पूरा करने की आवश्यकता, किसी की भूमिका एवम् प्रतिष्ठा को स्वीकार करना, प्रतिमान एवम् लोकाचारों को मानने की की बाध्यता।
- विभिन्न संघटक इकाइयों का सुव्यवस्थित प्रबंध ही व्यवस्था है।
- सामाजिक व्यवस्था परस्पर संबंधित सामाजिक कार्यों का सुव्यवस्थित एवम् क्रमवार प्रबंधन है।
- सामाजिक व्यवस्था की विशेषताएँ व्यक्ति की परस्पर संबंधित क्रियाओं की अनेकता पर आधारित हैं।
- सामाजिक व्यवस्था एक इकाई का निर्माण होना है। इसके विभिन्न भाग जैसे संस्थान, रिवाज, परम्परा, प्रक्रिया तथा नियम एकीकृत रूप में व्यवस्थित होते हैं।
- सामाजिक व्यवस्था सांस्कृतिक व्यवस्था से संबंधित है और इसका वातावरणीय पक्ष भी होता है।
- सामाजिक व्यवस्था के तत्व हैं आस्था एवम् ज्ञान, भावना, लक्ष्य, उद्देश्य, प्रतिमान, प्रतिष्ठा, भूमिका, श्रेणी, शक्ति, अनुज्ञप्ति तथा सुविधा।
- सामाजिक व्यवस्था की संरचना व्यक्तियों की अनेकता की अंतरक्रिया पर आधारित होती है।
- सामाजिक व्यवस्था सामाजिक संरचना के कार्यात्मक पक्ष से संबंधित है।
- सामाजिक संरचना समाज के अपेक्षित रूप से व्यवस्थित होने की एक प्रणाली है।
- सामाजिक संरचना से व्यक्त होता है कि विभिन्न इकाई-समूह, समाज में एक दूसरे से कैसे जुड़े होते हैं।
- सामाजिक संरचना के सरोकार प्रमुख सामाजिक संगठन हैं जिनमें समुदायों के प्रकार, संघ और संस्थाएँ सम्मिलित हैं।
- सामाजिक-संगठन एवं सामाजिक संरचना में परस्पर गहरा संबंध है।

Notes

Notes

पाठान्त प्रश्न

1. अपने शब्दों में सामाजिक संरचना एवम् सामाजिक संगठन की व्याख्या कीजिए।
2. उदाहरण देकर निम्न को परिभाषित करें (100 से 150 शब्दों में)
   क. भूमिका ख. प्रस्थिति ग. प्रतिमान घ. अनुज्ञप्ति ङ शक्ति
3. सामाजिक व्यवस्था की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. सामाजिक व्यवस्था के तत्वों का वर्णन कीजिए।

शब्दावली

(1) इनकम्बेंट: किसी स्थान या आफिस में कार्यरत व्यक्ति

(2) डिसीजड: जो अभी तुरंत मरा हो।

(3) नॉलेज (ज्ञान): शब्दकोशानुसार, एक खास प्रकार का ज्ञान। समाजशास्त्र में सामाजिक संबंधों से जुड़ा रहता है।

(4) मोरस (लोकाचार): लोकाचार अर्थात वे नियम जो समाज के ज्यादातर व्यक्तियों के अनुसार भद्रता को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।

(5) ऐथिकस- नीति: क्या होना चाहिए। समाज विज्ञान, या विज्ञानों में इसका संबंध मूल्य तटस्थता से है परंतु यहां यह जीवनमूल्यों से संबद्ध है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. स 2. स 3. अ

7.2

अ. प्रत्याशित ब. प्रस्थिति (प्रतिष्ठा) स. लक्ष्य
द. अनुज्ञप्ति त. प्रस्थिति (प्रतिष्ठा) न. (जीवन मूल्य)

7.3

(1) सत्य (2) असत्य (3) सत्य
(4) असत्य (5) सत्य